राजकीय महाविद्यालय, पनारसा

जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश

रूमसू काहिका

सांगीतिक तथा सांस्कृतिक शैक्षणिक यात्रा

(लोक संस्कृति, पारंपरिक संगीत एवं वाद्य यंत्रों पर आधारित अध्ययन रिपोर्ट)

वर्ष 2026










दिनांक
19 अगस्त 2026

समय
प्रातः 10:00 बजे

स्थान
रूमसू गाँव, तहसील कुल्लू,
जिला कुल्लू (हि.प्र.)

Principal
Govt. Degree College
Panarsa, Distt Mandi (HP)



लोकसंस्कृति एक ऐसा दर्पण है,जिसमे हम अपने इतिहास की झलक देख सकते हैं ।

राजकीय महाविद्यालय पनारसा, राजकीय महाविद्यालय कुल्लू,राजकीय महाविद्यालय हरिपुर तीनों महाविद्यालय के बीच हुए MOU के अंतर्गत हमें अवसर प्राप्त हुआ कि,हमने 19 अगस्त 2026 को हुए रूमसू काहिका के संदर्भ में काफ़ी लोगों के साक्षात्कार लिए, जिसमें रूमसू गाँव के नौड़ जिसकी काहिका में मुख्य भूमिका रहती है और देवता के वाद्ययंत्र बजाने वाले बजंतरी और अन्य लोगों से रू-ब-रू होने का अवसर प्रदान हुआ।बहुत लोगों से बातचीत कर हमने रूमसू काहिका की जानकारियां इकट्ठा की।यह केवल एक शैक्षणिक यात्रा नहीं थी बल्कि लोक संस्कृति को निरंतर आगे बढ़ाने की सीख थी।मैं धन्यवाद करना चाहता हूँ डॉ० उरसेम लता जी, प्राचार्या राजकीय महाविद्यालय पनारसा, डॉ० राकेश राणा जी,प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय कुल्लू, डॉ० शेफाली जी,प्राचार्या राजकीय महाविद्यालय हरिपुर,मनाली तथा रूमसू काहिका शैक्षणिक यात्रा से संबंधित सभी आचार्यगण एवं उन सभी लोगों का जिनसे हमारा साक्षात्कार हुआ।

दलीप चंद
कला स्नातक तृतीय वर्ष
संगीत विभाग,
छात्र संपादक
राजकीय महाविद्यालय पनारसा।

दलीप: किसी गाँव की असली पहचान केवल उसकी भूमि और प्रकृति से नहीं,बल्कि वहाँ रहने वाले लोगों के अनुभवों और स्मृतियों से होती है। आज हम आपके माध्यम से रूमसू गाँव के काहिका को समझने का प्रयास करेंगे। सबसे पहले,कृपया अपना परिचय अपना नाम,आयु और निवास स्थान हमारे पाठकों से साझा करें।
रूपचंद: जी मेरा नाम रूपचंद है, मेरी आयु 58 वर्ष है और मैं रुमसू गाँव का रहने वाला हूँ।

दलीप: महोदय मैं आपसे जानना चाहता हूँ कि रूमसू
काहिका क्यों मनाया जाता है, इसके पीछे का इतिहास और इससे जुड़ी विशेषताएँ बताएँ।

रूपचंद: जी रूमसू काहिका का जो स्वरूप आज हमारे सामने हैं,उसमें पहले के मुक़ाबले कुछ बदलाव हुए हैं लेकिन हमें गर्व है अपनी लोकसंस्कृति पर जो सैकड़ों वर्षों से पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है।
आज का जो काहिका आप देख रहे हैं,वो रूमसू गाँव में मनाया जाता है। लेकिन ये काहिका पहले रूमसू के उपर कुछ दूरी पर रूमटू गांवों से संबंधित है,जहाँ पर देव शुभ नारायण ने नौड़ की उत्पत्ति की थी।बाद में काहिका को रूमटू गाँव से रूमसू गाँव में स्थानांतरित किया और उसके बाद से रूमसू गाँव में ही मनाया जाता आ रहा है।
यह काहिका देवता शुभ नारायण जी को समर्पित है,और काहिका में देवता की बहन त्रिपुरा सुंदरी भी शामिल होती है,जो नगर से

आती है। अब मैं बात करूँ काहिका को आयोजित करने की तो यह देवता शुभ नारायण के आदेश पर मनाया जाता है। मान्यता है कि गाँव में जब-जब नकारात्मकता, बिमारियों आदि का ख़तरा बढ़ जाता है तो इस खतरे के निवारण के लिए काहिका का आयोजन किया जाता है।

इसके इतिहास की बात करें तो सही जानकारी तो नहीं लेकिन मान्यता है कि जब से गाँव का बसना हुआ है तब से ही इसका आरम्भ भी हुआ था।

इस काहिका में नौड़ की मुख्य भूमिका रहती है, नौड़ ही काहिका को गति देता है। इसकी विशेषता है कि नौड़ किसी जाति विशेष से संबंधित नहीं होता है।

दलीप: महोदय काहिका कितने वर्षों के अंतराल में आयोजित किया जाता है?

रूपचंद: जी इसका कोई एक समय नहीं है, स्थानीय देवता शुभ नारायण जी के आदेशानुसार ही इसका आयोजन किया जाता है। मान्यता है कि देवता को जब-जब लगता है कि गाँव में नकारात्मकता का माहौल या बिमारियों का प्रकोप बढ़ गया है तो उनका विनाश करने के लिए काहिका का आयोजन किया जाता है।

दलीप:महोदय आज का काहिका कितने वर्षों के बाद आयोजित किया गया है?

रूपचंद: वर्तमान 2026 का काहिका 17 वर्षों के बाद आयोजित किया गया है, इससे पहले 2009 में मनाया गया था, उससे पहले कब हुआ था उसे बताने में मैं असमर्थ हूँ।यथार्थ इसका कोई निश्चित समय नहीं है।

दलीप:महोदय नौड़ के बारे में बताइए और इसकी काहिका में क्या भूमिका रहती है?

रूपचंद: बहुत अच्छा प्रश्न! नौड़ काहिका का मुख्य पात्र है। यह गाँव का एक व्यक्ति है जिसे देवता शुभ नारायण द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से तीर मारकर मार दिया जाता है और वह व्यक्ति कुछ घंटे के लिए मर जाता है। उसके पश्चात उस मृत व्यक्ति की लाश को देवता शुभ नारायण के गुर के साथ और देवलुओं के साथ देवता प्रांगण में लोकगीतों और लोकवाद्यों की धुनों के साथ लोक नृत्य करते हुए गोल चकर लगाए जाते हैं, उसके उपरांत माता त्रिपुरा सुंदरी अपनी शक्ति से उस मृत व्यक्ति को पुनः जीवित करती है। यदि वह व्यक्ति माता के द्वारा ज़िंदा नहीं हो पाया तो उसके लिए भी प्रावधान रखा गया है,तो देवता की सारी संपत्ति (धन सोना,चाँदी) नौड़ की पत्नी नौड़न को दी जाती है।हालांकि ऐसा पहले भी हुआ है नौड़ ज़िंदा नहीं हो पाया, फलस्वरूप नौड़ की पत्नी नौड़न को देवता शुभ नारायण की सारी सम्पत्ति दी गई।

दलीप: महोदय काहिका नकारात्मकता का विनाश कर सकारात्मकता का पुनः निर्माण का प्रतीक है, मेरी छोटी से जिज्ञासा है कि सकारात्मकता का पुनः प्रारंभ करने के लिए कोई और विधि भी तो हो सकती थी, अर्थात नौड़ मारने की प्रक्रिया और सकारात्मकता के प्रारंभ में क्या संबंध है?

रूपचंद: अच्छा प्रश्न! जी इसकी मान्यता है,जो मारने की विधि है वह वास्तव में उस नकारात्मकता को मार दिया जाता है,और

मरने के बाद ज़िंदा करने का अर्थ है, नकारात्मकता को मारकर सकारात्मकता की एक नई शुरुआत करना। देव शुभनारायण नौड़ को मारकर नकारात्मकता का अंत करते है,और माता त्रिपुरा सुंदरी जी के द्वारा मृत व्यक्ति को ज़िंदा किया है,अर्थात सकारात्मकता का एक नया प्रारम्भ किया जाता है।

दलीप: महोदय हम देखते हैं कि काहिका में आए हुए सभी व्यक्तियों के ऊपर आटा फेंका जाता है उसके पीछे का क्या कारण है?

रूपचंद: जी वह आटा जौ का होता है। इसमें गेहूं के आटे का उपयोग नहीं किया जाता है। यह सर्वमान्य है कि जौ का आटा सफ़ेद होने के कारण उसे शांति का प्रतीक माना जाता है और जौ के आटे को व्यक्तियों पर इसलिए फेंका जाता है ताकी नकारात्मकता का अंत हो सके। मान्यता है कि सफ़ेद आटा शांति और सत्य का प्रतीक है,अर्थात मृत व्यक्ति के ज़िंदा होने के साथ सफ़ेद आटा सत्य का और नई शुरुआत का प्रतीक है। इस प्रकार गाँव का शुद्धीकरण होता है।

दलीप: महोदय काहिका में किन-किन और कितने प्रकार के वाद्यों का प्रयोग किया जाता है?

रूपचंद: काहिका में मुख्यतः तीन प्रकार के लोकवाद्यों का प्रयोग किया जाता है।

1. सुषिर लोकवाद्य,2.अवनद लोकवाद्य,3. घन लोकवाद्य।

1. सुषिर लोकवाद्य अन्तर्गत आने वाले लोक वाद्यों के में शहनाई, रणसिंगा, करनाल आदि प्रमुख हैं।

शहनाई:



शहनाई सुषिर लोकवाद्यों के अंतर्गत आने वाला एक प्रमुख वाद्य है , इसे फूक मारकर बजाया जाता है। यह तउंश नामक एक मज़बूत लकड़ी से तैयार की जाती है। इसे बजाने वाले व्यक्ति को हेसी कहा जाता है, जो अनेक प्रकार की धुनों को बजाकर काहिरा को गति देता है।

रणसिंगा:



रणसिंगा लोकसंस्कृति परंपरा का एक प्रमुख लोक सुषिर वाद्य है। यह मुख्यतः धातु विशेषकर ताँबे ,चाँदी तथा अन्य धातु से बनाया जाता है। इसे मुख से फूँक मारकर बजाया जाता है, जिससे इसकी तेज, गंभीर और प्रभावशाली ध्वनि उत्पन्न होती है। लोकसंस्कृति में यह केवल एक संगीत वाद्य नहीं, बल्कि देव परंपरा और सामूहिक सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण प्रतीक भी

है।

करनाल:



करनाल लोक-संस्कृति में प्रयुक्त एक महत्वपूर्ण पारंपरिक सुषिर वाद्य यंत्र है। इसे सामान्यतः धातु पीतल,चाँदी से बनाया जाता है और इसमें फूँकमारकर ध्वनि उत्पन्न की जाती है, इसलिए इसे सुषिर वाद्यों की श्रेणी में रखा जाता है।
देव-संस्कृति में करनाल का विशेष महत्व है। करनाल की गंभीर और दूर तक सुनाई देने वाली ध्वनि वातावरण को धार्मिक एवं उत्सवपूर्ण बना देती है। इसे अक्सर अन्य पारंपरिक वाद्यों के साथ बजाया जाता है।

2: अवनद वाद्य:

:ढौंस:



ढौंस लोकवाद्यों में सबसे मुख्य वाद्य माना जाता है, ढौंस को लकड़ी से बनाया जाता है और उसके ऊपर बकरी के चमड़े से मढ़ा जाता है और इसे लकड़ी की छड़ी से बजाया जाता है। ढौंस को बजाने वाले को ढौंसी कहा जाता है। ढौंसी समस्त वाद्ययंत्रों का नेतृत्व करता है वही निर्णय लेता है कि किस समय कौन सा ताल बजाया जाएगा।

:ढोल :



ढोल लोकवाद्य में एक प्रमुख लोक अवनत वाद्य है। यह धातु के खोखले बेलनाकार शरीर पर दोनों ओर चमड़े से मढ़कर बनाया जाता है,इसे छड़ी से बजाया जाता है। इसकी गूँजदार ध्वनि लोकगीतों, लोकधुनों और देव संस्कृति के आयोजनों में विशेष उत्साह उत्पन्न करती है। इसे बजाने वाले व्यक्ति को ढोली कहा जाता है।
इसकी संगत नगाड़ा के साथ की जाती है।

:नगाड़ा:



नगाड़ा देव-संस्कृति में प्रयोग होने वाला एक प्रमुख अवनद वाद्य है। यह सामान्यतः धातु के अर्धगोलाकार ढाँचे पर चमड़ा मढ़कर बनाया जाता है। इसे प्रायः लकड़ी की छड़ियों या डंडों से प्रहार करके बजाया जाता है।देव-संस्कृति में नगाड़े का विशेष महत्व है।नगाड़े की गंभीर और गूंजदार ध्वनि दूर तक सुनाई देती है तथा धार्मिक वातावरण में विशेष उत्साह और श्रद्धा उत्पन्न करती है। अक्सर नगाड़े को रणसिंगा,करनाल,ढोल और अन्य पारंपरिक लोक वाद्यों के साथ बजाया जाता है।

:बाम:



बाम लोक एवं देव-संस्कृति में प्रयोग होने वाला एक पारंपरिक अवनद्ध वाद्य यंत्र है। इसका आकार सामान्य ढोल या नगाड़े की अपेक्षा बड़ा होता है और इसके ऊपर चमड़ा मढ़ा जाता है। इसे प्रायः डंडे से बजाकर गहरी एवं गूंजदार ध्वनि उत्पन्न की जाती है। इसकी गंभीर और शक्तिशाली ध्वनि दूर तक सुनाई देती है तथा देव-समारोहों के वातावरण को विशेष रूप से प्रभावशाली बनाती है।

3:घन वाद्य

:भाणा:



भाणा लोक एवं देव-संस्कृति में प्रयोग होने वाला एक महत्वपूर्ण घन वाद्य यंत्र माना जाता है। यह सामान्यतः
काँसे से निर्मित होता है और गोलाकार, चपटी या थाली की आकृति का दिखाई देता है। इसे लकड़ी की छड़ी से आघात करके बजाया जाता है, जिससे मधुर ध्वनि उत्पन्न होती है।इसे ताल के सम पर बजाया जाता है।इसकी ध्वनि अन्य पारंपरिक वाद्यों—जैसे ढोल,नगाड़ा,करनाल आदि के साथ मिलकर देव-समारोहों को विशेष सांस्कृतिक स्वर प्रदान करती है

दलीप: महोदय मैंने बहुत जगह देखा है कि लोकवाद्यों को केवल निम्न वर्ग से संबंध रखने वाले लोग ही बजाते हैं, क्या यहाँ पर भी निम्न वर्ग के ही लोग वाद्य को बजाते हैं, यदि बजाते हैं तो उसका कारण क्या है?

रूपचंद: जी इसका एक सीधा कारण है रूढ़िवादिता!

इतिहास में जाएँ तो लोगों को काम के अनुसार वर्गों में विभाजित किया गया था, लेकिन बाद में वे काम संबंधित ना होकर जन्म संबंधित माने जाने लगे और यह निरंतर जारी रहा जिसका जीवंत उदाहरण आज यह है, वर्षों से केवल निम्न वर्ग के ही लोग वाद्यों को बजा रहे हैं।

और कुछ लोगों की मान्यताएँ है कि देवता के पास बजंतरी दूसरे स्थान से प्रवासी आए और उन्होंने देवता की ज़मीन पर शरण ली और देवता के ओर से उन्हें उधारी ज़मीन दी गई , जिस ज़मीन का ऋण वे नहीं चुका पाए जो आज भी चल रहा है।इसलिए वे पीढ़ी दर पीढ़ी उसका भुगतान कर रहे हैं।

दलीप: महोदय उपरोक्त पहली बात से तो मैं सहमत हूँ किंतु दूसरी मान्यता से मुझे यह प्रतीत हो रहा है प्रवासियों को ऋण पर ज़मीन देना कम और सूदखोरी अधिक लग रहा है।

दलीप: महोदय जब आप छोटे थे तो उस समय और आज के समय में बजंत्रियों की संख्या में क्या बदलाव हुए हैं?
रूपचंद: जी बदलाव बहुत हैं, आज पहले के मुक़ाबले कम लोग हैं, कारण आज का युवा शिक्षित है, उन्हें संविधान का ज्ञान है , उन्हें समानता और समता का ज्ञान है , शायद उन्हें समानता और समता से वंचित रहना पड़ता है इसलिए आज कुछ कमी हुई है।

दलीप: महोदय काहिका में वाद्य यंत्रों की देव धूनों में पहले और आज के समय क्या-क्या बदलाव हुए हैं?

रूपचंद: जी देवधुने तो वैसे की वैसे ही बरकरार हैं जैसी पहले थी उसी प्रकार से आज भी बजाई जाती है।यह धुनें शास्त्रीय संगीत की भांति ही एक निश्चित समय और स्वरों के अनुसार भिन्न-भिन्न होती हैं।

दलीप: महोदय क्या इन धुनों का कोई विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है?
रूपचंद: जी नहीं! इनको सिखाने वाला कोई विशेष गुरु नहीं होता , लेकिन जो व्यक्ति उन्हें बजाते हैं वे घर पर ही इसका प्रशिक्षण लेते हैं, और मैं कहूँ तो यह सरल और सहज होने के कारण स्वाभाविक रूप से आ जाती हैं।

दलीप: महोदय काहिका में कौन कौन से नृत्य या नाटी होती है?
रूपचन्द: जी नाटी तो नहीं लेकिन लोक नृत्य होता है जिसे स्थानीय बोली में हुल्की कहा जाता है। हुल्की एक ऐसा लोक नृत्य है, जो देव प्रांगण में आयोजित किया जाता है।जब सभी देउलु नौड़ के आगे पीछे मुँह पर जौ का आटा लगाकर जोश और ऊर्जा , उत्साह के साथ नाचते है तो उसे हुल्की कहा जाता है। हुल्की नृत्य की विशेषता है कि इसमें केवल पुरुष ही नाचते हैं।

दलीप: महोदय जी क्या रूमसू काहिका से संबंधित कोई पारम्परिक लोकगीत बनाया गया है ?

रूपचन्द: जी काहिका से संबंधित कोई विशेष लोकगीत तो नहीं लिखा या बनाया गया है। लेकिन इसमें कुल्लू के लोकगीतों को ही गाया जाता है। लेकिन जब माता त्रिपुरा सुंदरी नगर से रूमसू गाँव के लिए आती है तो उस समय माता के स्वागत गीत के रूप में एक लोकगीत है। मैं गीत के बोल बताता हूँ।

झूण-मूण केरदी लोड़ी आई मेरी महामाइऐ
झूण-मूण केरदी,लोड़ी आई हो॥

सौता जोता लांघिया लोड़ी आई मेरी महामाइऐ
सौता जोता लांघिया लोड़ी आई हो॥

म्हारी लोड़ी रक्शा डाहि मेरी महामाईऐ
म्हारी लोड़ी रक्शा डाहि हो॥

तेरी लोड़ी नैजरा डाहि मेरी महामाईऐ
तेरी लोड़ी नैजरा डाहि हो॥

झूण-मूण केरदी लोड़ी आई मेरी महामाइऐ
झूण-मूण केरदी लोड़ी आई हो॥

दलीप: महोदय काहिका के भविष्य के बारे में आपके क्या विचार हैं?

रूपचंद: जी बहुत अच्छा प्रश्न !
भविष्य कहूँ तो,पहले तो मेरे विचार से यह काहिका केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि हमारे समाज की स्मृतियों,आस्थाओं,परंपराओं तथा सांस्कृतिक चेतना का जीवंत दस्तावेज है।इसका भविष्य केवल समय के भरोसे सुरक्षित नहीं रह सकता है, इसके संरक्षण की ज़िम्मेदारी समाज और विशेष रूप से नई पीढ़ी की को समझनी होगी।
आज आवश्यकता इस बात की है कि हम काहिका को देखने या मनाने तक सीमित न रखें, इसके पीछे छिपे लोकविश्वास और सामाजिक मूल्यों को भी समझें।आधुनिकता की दौड़ में परिवर्तन स्वाभाविक है, लेकिन परिवर्तन के नाम पर अपनी मूल सांस्कृतिक पहचान को खो देना उचित नहीं होगा।
यदि नई पीढ़ी काहिका को अपनी विरासत मानकर इसके संरक्षण और अध्ययन के लिए आगे आती है,तो इसका भविष्य निश्चित रूप से उज्ज्वल होगा।
मेरा विश्वास है कि जिस समाज को अपनी जड़ों का ज्ञान होता है वही समाज भविष्य की ओर अधिक मजबूती से आगे बढ़ता है। इसलिए काहिका का सरंक्षण केवल एक परंपरा को बचाना नहीं, बल्कि अपनी सांस्कृतिक आत्मा को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाना है ।
भवदीय।

प्रस्तुतकर्ता: दलीप चंद
कला स्नातक तृतीय वर्ष
संगीत विभाग
छात्र संपादक,
राजकीय महाविद्यालय पनारसा।
ज़िला मण्डी(हि०प्र०)।

Principal
Govt. Degree College
Panarsa, Distt Mandi(H.P.)

प्रस्तुत: डॉ० पूजा शर्मा
हस्ताक्षर
04/12/2026
आचार्य
गायन संगीत विभाग
राजकीय महाविद्यालय
पनारसा मण्डी (हि०प्र०)।